शब्द का प्रयोग किया है। ये देश की चिति है। तो भारत की चिति क्या है? भारत का मानस क्या है? तो भारत का मानस यही है कि जो मैजिनी ने कहा, जो यहां के ऋषि-मुनियों ने कहा, जो पं. दीनदयाल जी ने कहा कि हम विश्व के कल्याण की कामना करने वाले इस प्रकार का राष्ट्र के रूप में हम हैं। इसलिए यह भाव श्रेष्ठ भाव है। श्रेष्ठ भाव का पोषण करना ही पड़ेगा। और इसलिए जब हमने देखा कि अनुकूल बातें होती गई तो भारत का उत्थान हुआ। जब-जब इस चिति के प्रतिकूल वातावरण बनता गया तब-तब भारत का पतन हुआ है। इसलिए चिति की प्रतिकूलता, अनुकूलता का परिणाम भारत के उत्थान और पतन के साथ जुड़ा हुआ है। इसलिए चिति को जागृत रखना है, इस भाव को बनाये रखना है, इस भाव को पुष्ट करना है। विश्व के कल्याण की कामना करने वाला चिंतन ही विश्व के मंच पर शक्ति के साथ खड़ा रहेगा यही संदेश है, यही चिति है भारत की। परन्तु इस भाव को इस चिति को समझकर ही अपनी आत्मा को समझकर, अपनी इस भूमिका को समझकर मानने वाला समाज अगर खड़ा होता है तो उसके लिए वह शब्द प्रयोग करते हैं कि ऐसी एक जागृत संघ की शक्ति के लिए उन्होंने शब्द का प्रयोग किया 'विराट'। यह दो शब्द प्रयोग विशेष रूप से पंडित जी के सारे साहित्य में आते हैं एक चिति और एक विराट। चिति हमारी भूमिका है, चिति हमारी मानसिकता है और इसको समझकर संघ की, शक्ति के रूप में खड़ा होने वाला समाज उसको उन्होंने विराट शब्द का प्रयोग किया है। और इसलिए चिति और विराट को समझना होगा। पर कभी कभी लगता है कि विविधता को भी लोगों ने भेदता का कारण बनाया है। हमारी चिति अगर सबकी है, एक ही चिति के हम लोग हैं तो उपर के भेदों का कोई महत्व नहीं है। पंडित जी कहते हैं कि विविधता ये हिन्दू चिन्तन की, हिन्दू समाज की, हिन्दू समूह की, विशेषता है। लोगों ने इसको भेद बताया है। आप कपड़े ऐसे पहनते हैं, आप कपड़े वैसे पहनते हैं, ये भाषाएं, वो भाषाएं, आपका ये खानपान है, आपका वो खानपान है, आप एक कैसे हो सकते हैं। अपनी विचारधारा के विरोधी विचार करने वालों ने इस विविधता को भेद के रूप में प्रस्तुत किया। पंडित जी इस भेद को सौन्दर्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यही हमारा सौन्दर्य है। फूलों का हार होता है, पुष्प गुच्छ होता है तो उसमें कभी एक रंग के फूल नहीं होते, उसमें विविध रंगों के फूल होते हैं, विविध प्रकार के फूल होते हैं, वही पुष्पहार मन को आनन्द देता है। पर कोई कहेगा कि यह हार तो